D2-Sub.

शेरशाह की अन्य विजयें

दिल्ली, आगरा, तथा पंजाब की विजय के बाद शेरशाह ने साम्राज्य विस्तार का निश्चय किया तथा अन्य कई राज्यों पर विजय प्राप्त की।

गक्खड़ विजय :- गक्खड़ सिन्ध के उत्तर में झेलम एवं सिन्ध नदी के मध्य एक सामरिक महत्व का प्रदेश था। शेरशाह ने गक्खड़ों को परास्त कर उनके राज्य पर अधिकार जमा लिया। उसने वहां एक दुर्ग ~~बनवा~~ बनवाकर उसमें पाँच हजार सैनिकों को तैनात किया।

मालवा विजय (1542 ई०) — 1540 ई० में मालवा के सूबेदार मल्लू खां ने शेरखां को हुमायूँ के विरुद्ध सहायता देने का वचन दिया था, किन्तु बाद में वह इससे मुकर गया था। मल्लू खां ने स्वयं को स्वतंत्र शासक घोषित कर दिया था। अतः शेरशाह ने 1542 ई० में मालवा पर आक्रमण कर दिया। मल्लू खां ने बिना युद्ध लड़े उसकी अधीनता स्वीकार कर ली। मालवा को शेरशाह ने अपने साम्राज्य में मिला लिया तथा शुजाअत खां को वहां का सूबेदार बनाया।

~~राय~~

रायसीन विजय (~~1543~~) (1543 ई०)

रायसीन नरेश पूर्णमल अपने राज्य के मुस्लिम जागीदारों को परेशान करता था। अतः शेरशाह ने रायसीन को घेर लिया, किन्तु असफल रहा। शेरशाह ने अन्त में कपट का मार्ग अपनाया तथा राजपूतों को वचन दिया कि वे उसकी अधीनता स्वीकार

P.T.O.

कर लेंगे, तो उन्हे कोई ~~नुक्स~~ नुकसान नही पहुंचाया जाएगा, किन्तु राजपूतों के किले से बाहर आने पर शेरशाह ने उन पर आक्रमण कर दिया। फरिश्ता के अनुसार "इस युद्ध मे राजपूतों ने अभूतपूर्व वीरता का प्रदर्शन किया, किन्तु वे अफगान सैनिकों की संख्या के समक्ष नगण्य थे। समस्त राजपूत वीरगति को प्राप्त हुए। राजपूत महिलाओं व बच्चों को मुसलमानों ने अपना दास बना लिया।

मुल्तान तथा सिन्ध विजय (1543-44 ई०) सिन्ध तथा मुल्तान मे फतेह खां तथा बख्शूलंगा ने विद्रोह कर रखा था। शेरशाह के आदेश पर पंजाब के सूबेदार हैबत खां ने इन पर अधिकार कर सूरी साम्राज्य मे मिला दिया।

मारवाड़ विजय (1544 ई०) – मारवाड़ के शासक मालदेव ने शेरशाह की इच्छानुसार हुमायूं को बन्दी बनाकर नही भेजा था, इसलिए शेरशाह ने मारवाड़ पर आक्रमण कर दिया। मालदेव रणभूमि से पीछे हटने लगा, किन्तु उसके सरदारों ने अपनी स्वामीभक्ति प्रदर्शित करने के लिए शेरशाह का डटकर मुकाबला किया। अपनी सफलता से अशंकित होकर शेरशाह ने कहा "मै केवल एक मुट्ठीभर बाजरे के लिये हिन्दुस्तान के साम्राज्य को खो बैठता।" उसे यह सफलता बड़ी कठिनाई से मिली थी।

कालिंजर विजय → कालिंजर नरेश कीरतसिंह ने शेरशाह की इच्छा के विरुद्ध रीवा के राजा वीरभान को आश्रय दिया था। अतः शेरशाह ने कालिंजर पर आक्रमण कर दिया। छः मास के संघर्ष के बाद शेरशाह विजयी रहा।

विजय प्राप्ति के कुछ समय पहले वह बारूद विस्फोट मे घायल हो गया फलस्वरूप 22 मई 1545 ई० को उसकी मृत्यु हो गई।

समाप्त [signature]

Scanned with CamScanner